NJESR/December-2023/Volume-5/Issue-12 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2023.5.12.19-21

संवेगात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० दिनेश कुमार शर्मा प्राचार्य
एम० बी० कॉलेज ऑफ एजुकेशन, दरभंगा, बिहार
E&mail Id:- drdineshsharma99@gmail-com

Received:26November 2023/ Revised: 6December 2023/Accepted:20 December 2023/Published: 29 December 2023)

सार :– संवेग प्राणी का वह आन्तरिक अनुभव है जिसमें उसकी मानसिक स्थिति एक उथल–पुथल के रूप में अभिव्यक्त होती है। संवेग वस्तुतः ऐसी प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति उद्दीपक द्वारा अनुभव करता है। संवेदनात्मक अनुभव संवेदन चेतन उत्पन्न करने की अत्यन्त प्रारम्भिक स्थिति है। शिशु का संवेदन टूटा–फूटा अधूरा होता है। प्रौढ़ की संवेदना विकृतजन्य होती है। संवेग शब्द अंग्रेजी के म्उवजपवद शब्द के लिया गया है। संवेग एक भावात्मक स्थिति है। जब मनुष्य का शरीर उद्दीप्त होता है। इसी अवस्था को संवेग कहते है। उदाहरण स्वरूप भय, क्रोध, प्रेप, चिन्ता इर्ष्या, प्रसन्नता आदि उद्दीप्त अवस्थाएं है। संवेग में भाव, आवेश, तथा शारीरिक प्रतिक्रियाएं सम्मिलित है।

मुख्य शब्दावली – संवेग, विकास, अवस्थाएँ, विशेषताएँ, प्रकार, उद्दीप्त, भय, खुशी, अनुभूति, किशोर, शारीरिक, मानसिक इत्यादि।

संवेग का अर्थ एवं परिभाषाएँ :–

संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था का दूसरा नाम है। वस्तुतः संवेग एक जटिल अवस्था है जिसमें कुछ शारीरिक प्रतिक्रियाएँ जैसे– हृद्य गति में परिवर्तन, रक्त चाप, कम्पन आदि में परिवर्तन होती है। इनके अलावा शरीर के बाहरी अंगों हाथ, पैर, आँख, चेहरा आदि में कुछ परिवर्तन हो जाते है जिसे देखकर यह समझा जाता है कि बालक संवेग की स्थिति में है। संवेग की शारीरिक की शारीरिक प्रतिक्रियायें अभिव्यंजक व्यवहार के अलावा एक आत्मनिष्ठ भाव भी होता है। सामान्यतः किसी भी संवेग में सुखद या दुःखद के भाव की अनुभूति पाई जाती है। जैसे– भय में दुःखद भाव की अनुभूति तथा खुशी में सुखद भाव की अनुभूति होति है।

वुडवर्थ के मतानुसार – संवेग किसी प्राणी की गतिमय और हलचलपूर्ण अवस्था है। व्यक्ति को स्वयं यह अपनी भावनाओं को उत्तेजनापूर्ण स्थिति प्रतीत होती है। दूसरे व्यक्ति को यह उत्तेजित अथवा अशांत माँसपेशियों और ग्रन्थियों की एक क्रिया के रूप में दिखाई देती है।

क्रो एण्ड को के अनुसारः– एक संवेग इस प्रकार से एक भावात्मक अनुभव है जो व्यक्ति में सामान्यीकृत आन्तरिक समायोजन औरउ मानसिक तथा शारीरिक रूप से उत्तेजित दशाओं के साथ–साथ होता है। और वह उसके बाह्य व्यवहार में दिखाई देता है। इस प्रकार से परिभाषा किये जाने पर एक संवेग एक आन्तरिक गत्यात्मक समायोजन होता है। जो व्यक्ति की संतुष्टि, सुरक्षा और कल्याण अमब चीप लिये संक्रियाशील होता है।

बेरोन, बर्न तथा केण्टोविज के अनुसारः– संवेग से तात्पर्य एक ऐसी आत्मनिष्ठ भाव की अवस्था से होता है जिसमें कुछ शारीरिक उत्तेजना पैदा होती है। और फिर उसमें कुछ खास–खास व्यवहार होते है।

रॉस के अनुसारः– संवेग चेतना की वह अवस्था है जिसमें रागात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।

संवेग की विशेषताएँः– संवेगों की मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेगों की प्रकृति भावात्मक होती है जो व्यक्ति को क्षणिक उत्तेजना प्रदान करते है। संवेगों को व्यक्ति की मुख–मुद्रा तथा अन्य व्यवहार के अवलोकन से पहचाना जा सकता है। संवेगों की विशेषताएँ निम्न है –

1. मनुष्य की समस्त दशाओं एवं अवस्थाओं में संवेग पाये जाते है।
2. सामान्य रूप से संवेग की उत्पत्ति प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से होती है।
3. संवेगों में व्यापकता पाई जाती है। संवेग पशु–पक्षी, बालक–वृद्ध सभी पाये जाते है।
4. संवेगात्मक अनुभूतियों के साथ–साथ कोई–न–कोई मूल प्रवृति अथवा मूलभूत आवश्यकता जुड़ी रहती है।
5. किसी भी संवेग को जाग्रत करने के लिये भावनाओं का होना आवश्यक है।
6. संवेग मनो शारीरिक होता है।
7. संवेगों में अस्थिरता पाई जाती है।
8. प्रत्येक संवेगात्मक अनुभूति व्यक्ति में कई प्रकार के शारीरिक और शरीर सम्बन्धी परिवर्तनों को जन्म देती है।
9. संवेग पर परिस्थिति और ग्रन्थियों का प्रभाव पड़ता है।
10. संवेगों की दशा में बुद्धि काम नहीं करती है।
11. प्रशिक्षण, ज्ञान, अनुभव की वृद्धि के परिणामस्वरूप मनुष्य में विशेषकर संवेगों का स्थानान्तरण होती है।

सवेगों क प्रकार

मेकडूगल ने 14 मूल प्रवृतियों के सापेक्ष कुल– 14 संवेगों का उल्लेख किया है नमें से प्रत्येक संवेग एक–एक मूल प्रवृत्ति से सम्बन्धित होता है ये चौदह संवेग तथा सम्बन्धित मूल तेयाँ निम्न प्रकार है–

मूल प्रवृति (Instinet)	**संवेग (Emotion)**
1. पलायन (Escape)	भय (Fear)
2. युयुत्सा (Combat)	क्रोध (Anger)

Created by Universal Document Converter

3. निवृत्ति (Repulstion)	घृणा (Disgust)
4. सन्तान – कामना (Parental)	वात्सल्य (Tenderness)
5. शरणागति (Appeal)	करुणा (Distress)
6. काम – प्रवृति (Sex)	कामुकता (Lust)
7. जिज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
8. दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative Self)
9. आत्म गौरव (Self Assertion)	आत्म–अभिमान (Positive Self Feeing)
10. सामूहिकता (Gregariousren)	एकाकीपन (Lonlyness)
11. भोजन तलाश (Food Seeking)	भूख (Hunger)
12. संग्रहण (Acquisition)	अधिकार (Feeling of Ownership)
13. रचनाधर्मिता (Construction)	कृतिभाव (Creativeness)
14. हास (Laughter)	आमोद (Amusement)

भारतीय चिन्तन परम्परा में राग तथा द्वेष नामक दो मुख्य संवेगों को स्वीकार किया है जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. रागात्मक संवेग **(Positive Emotions)**

विवरण	संवेग
अपने से बड़ों के प्रति राग	सम्मान, भक्ति, श्रद्धा
अपने बराबर वालों के प्रति राग	मित्रता, प्रेम, आसक्ति
अपने से छोटों के प्रति राग –	स्नेह, वात्सल्य दया

2. द्वेषात्मक संवेग **(Negative Emotions)**

विवरण	संवेग
अपने से बड़ों के प्रति द्वेष	भय, कायरता, घृणा
अपने से बराबर वालों के प्रति द्वेष	क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष
अपने से छाटों अमब चीप प्रति द्वेष	गर्व, अभिमान अधिकार

शैशवावस्था उमें संवेगात्मक विकास

संवेग की उपस्थिति के बारे में स्प्रिट्ज नामक मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि ष्संवेग जन्म से ही विद्यमान नहीं रहते है। मानव व्यक्तित्व के किसी अंग के समान उनका विकास होता है।

गेट्स के मतानुसार

प्रारम्भ में संवेगात्मक प्रतिक्रियायें एक सामान्य उत्तेजना मात्र होती है उनमें क्रोध, भय, हर्ष इत्यादि का स्पष्ट बोध नहीं होता है।

1. शिशु जन्म के समय रोता चिल्लाता तथा पैर पटकता है। इसी प्रकार वह जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति करते है।
2. शिशु का संवेगात्मक व्यवहार अत्यधिक अस्थिर होता है। शिशु का संवेग थोड़े समय तक रहता है और शीघ्र ही समाप्त हो जाता है शिशु गोदी में आने के लिये रोता है किन्तु गोद में आने के बाद चुप हो जाता है। जैसे–जैसे आयु बढ़ती जाती है संवेगों में स्थिरता आती जाती है।
3. शिशु की संवेगात्मक अभिव्यक्ति में क्रमशः परिवर्तन होता जाता है। शिशु आरम्भ में प्रसन्न होने पर केवल मुस्कुराता है। कुछ और बड़ा होने पर वह हँसकर अपनी प्रसन्नता दिखाता है। विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करके व्यक्त करता हूँ।
4. मनोवैज्ञानिक वाटसन के मतानुसार तीन संवेग शैशवावस्था में बहुत स्पष्ट तरीके से प्रदर्शित होते है।
   a- स्नेह
   b- भय
   c- क्रोध

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास की विशेषताए –

1. संवेगों की उग्रता में कमी आ जाती है। समाजीकरण के प्रारम्भ होने के फलस्वरूप बालक संवेगों का दमन करने का प्रयास करता है अथवा उनकों शिष्ट दंग से अभिव्यक्त करता है। माता–पिता–शिक्षक, तथा अन्य बड़े व्यक्तियों के समझ वह ऐसे संवेगों को प्रकट नहीं करता है। जिसे अवांछनीय समझा जाता है।
2. बाल्यावस्था में परिवार, समाज या विद्यालय के सख्त नियमों में बालक निराशा और असहनीय का भाव बड़ी तीव्रता से पैदा करता है। उन्हें लगता है किवे बिलकुल अकेले है। उनका अपना कोई नहीं है। जब बालकों की इच्छाएं पूरी नहीं होती है तो वह महसूस करने लगते है कि उन्हें प्यार कोई नहीं करता है।
3. बालक को अपने कार्य में सुख–दुःख की अनुभूति होती है। सफलता एवं असफलता से संतोष तथा असंतोष की भावना बालक में पाई जाती है।

Created by Universal Document Converter

4. बाल्यावस्था में बालक किसी–न–किसी समूह का सदस्य होता है। वह उस समूह के कार्य–कलापों में भाग लेता है। किसी कारण वश वह समूह के दूसरे सदस्यों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, घृणा तथा भेदभाव की भावना उत्पन्न हो जाती है। वह दूसरे बालकों के प्रति अपने व्यवहार में इन संवेगों को व्यक्त करने लगता है। यथा– व्यंग्य करना, चिढ़ाना, झूठे आरोप लगाना, तिरस्कार करना, निदा करना इत्यादि । बालकों में जिज्ञासा की भावना का भी विकास होता है।

कशोरावस्था में संवेगात्मक विकास की विशेषताएँ

किशोरावस्था में किशोर बालकों का संवेगात्मक संतुलन बिगड़ जाता है इस समय तनाव, तूफान सी संवेगों में गति व प्रचण्डता होती है। इस अवस्था में यौन ग्रन्थियों का विकास तेजी से होता है। रीरिक परिवर्तन भी तीव्रगति के साथ होते है। संवेगात्मक दृष्टि से अस्थिर हो जाते अमब` –

1. किशोरावस्था में संवेगों में अस्थिरता होने के कारण समायोजन करने की समस्या का सामना करना पड़ता है।
2. अनुकूल परिस्थितियों में प्रोत्साहन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में निराशा प्राप्त करता है। यह निराशा आत्महत्या की भावना तक भी पहुँच सकती है।
3. किशोर का जीवन अत्यधिक भाव–प्रधान होता है। उसमें आत्म सम्मान भी स्थायी भाव विकसित हो जाता है वह किसी भी प्रकार अपने आत्म–सम्मान पर लगी ठेस बर्दाश्त नहीं कर सकता है।
4. किशोरावस्था में काम–भावना तीव्र हो जाती है। किशोरों में प्रेम संवेग बढ़ जाता है। वह विषम लिंग की ओर आकर्षित होने का प्रेम भाव भी प्रदर्शित करते है।
5. किशोरावस्था में प्रेम दया, क्रोध सहानुभूति आदि संवेगों को स्थायी रूप में प्राप्त कर लेते है किन्तु इन पर नियंत्रण नहीं रख पाते है।
6. किशोर का जीवन कल्पनाशील होने के कारण दिवा स्वप्नों का होता है। वह दिवा स्वप्नों में अपने संवेगों की अभिव्यक्ति करता है।
7. इस अवस्था में संवेगों की अधिकता होती है। वे जिस चरित्र या नायक से प्रभावित होते है उसी चरित्र को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते है। ये चरित्र, कहानी, उपन्यास, सिनेमा इतिहास वर्तमान एवं भूतकालीन राजनीति या रिश्तेदार या पड़ौसी कहीं से भी वे सकते है किशोर उन्हीं के आदर्शों के अनुसार अपना व्यवहार बात चीत भी शैली कपड़े पहनने का तरीका या अन्य चीजे को ढालने लग जाते है।
8. इस अवस्था में जैसा मार्गदर्शन प्राप्त होता है किशोर उसी तरह का आचरण चाहे वह अच्छा हो या बुरा उसी को अपना लेता है। इस अवस्था में शिक्षकों माता–पिता–मित्रों व शुभ–चिन्तकों को विशेष ध्यान रखना चाहिए।

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. स्वस्थ एवं शारीरिक विकास
2. बुद्धि
3. पारिवारिक वातावरण और आपसी सम्बन्ध
4. विद्यालय का वातावरण और शिक्षक
5. सामाजिक विकास और मित्रों के साथ सम्बन्ध
6. आस–पडौस, समुदाय, समाज

संवेगात्मक विकास का निहितार्थ–

1. शारीरिक विकास की दशा का संवेगात्मक विकास पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है भूख, प्यास, पीड़ा, रोग, थकान, काम आदि अवस्थाओं में बालक को क्रोध आता है। शिक्षकों के द्वारा ऐसे बालकों की आलोचना तथा तिरस्कार नहीं करना चाहिए।
2. संवेगों को विकास में स्नेह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बालक शिक्षक से स्नेह प्राप्त करना चाहता है। शिक्षकों को स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
3. संवेगों पर नियंत्रण करने के लिये उन्हें उचित दिशा में मोड़ना चाहिए। संवेगों को उचित दिशा में मोड़ने के लिये विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जा सकता है दमन, रेचन, मार्गान्तीकरण, शोधन अध्यवसाय और व्यक्त करना।
4. शिक्षक विद्यार्थी अमब चीप लिये आदर्श होता है शिक्षक छात्रों को समुचित दिशा निर्देश प्रदान करें छात्रों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा कक्षा–वातावरण भय मुक्त होना चाहिए।
5. संवेगों के प्रशिक्षण के लिये शिक्षकों को चाहिए कि बालकों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करें। इसके लिये कला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए। यथा– अभिनय, कविता, निबन्ध प्रतियोगिताएँ खेल–कूद वाद–विवाद पोस्टर इत्यादि। इस प्रकार शिक्षक बालक के संवेगात्मक विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। जो कि बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय डॉ० अजित कुमार –बाल्यावस्था एवं उसका विकास– अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2018
2. विद्यार्थी डॉ० गणेश शंकर– अधिगम एवं शिक्षण– अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
3. मंगल एस० के०– शिक्षा मनोविज्ञान– मोती लाल बनारसी दास पटना
4. सिंह अरूण कुमार – समाज मनोविज्ञान की रूप रेखा– श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
5. पी० डी० पाठक – शिक्षा मनोविज्ञान – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान
6. विकीपीडिया
7. प्रो० एस० पी० गुप्ता / डॉ० अलका गुप्ता – शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

Created by Universal Document Converter